7

अतीत से चेतावनी

(3:7-4:16)

इब्रानियों की पुस्तक ''प्रोत्साहन की एक बात'' है। उस प्रोत्साहन की एक विशेषता सही काम करने की विनती है। इस पत्री में शिक्षा के दूसरे भाग अर्थात 3:7-4:16 का यही उद्देश्य है।[1] ''यीशु पर ध्यान करो'' पाठ में हम ने इस वचन पाठ (3:7-14) की पहली आठ आयतों को संक्षेप में देखा था, और हमारे वचन पाठ के भाग अगले दो पाठों में भी होंगे। इस पाठ में हम पूरी आयतों को देखना चाहते हैं।

मैं इस पाठ को ''अतीत से चेतावनी'' नाम दे रहा हूं। अध्याय 3 और 4 में इब्रानियों के लेखक ने भजन संहिता 95 से उद्धृत किया था। उस भजन में जिसका आरम्भ आराधना के लिए पुकार के रूप में होता है, दाऊद ने अपनी प्रजा को विश्वासयोग्य बनाने के लिए प्रोत्साहित करने के लिए जंगल में इस्राएलियों के अनुभवों का इस्तेमाल किया। परमेश्वर ने सामर्थी भुजा के साथ इस्राएलियों को मिस्र से निकाला था। लाल समुद्र पार करने के बाद वे प्रतिज्ञा किए हुए देश कनान के रास्ते में जंगल में थे। उन्हें अपने छुटकारे के लिए परमेश्वर को महिमा देनी चाहिए थी पर इसके विपरीत वे बुड़बुड़ाते और शिकायत करते रहे।[2] पानी के न होने पर उनकी शिकायत एक विशेष उदाहरण थी (निर्गमन 17:2-7; देखें भजन संहिता 95:8)। एक निर्णायक घटना वह थी, जब कनान से खबर लेकर आए बारह जासूसों की बात सुनने के बाद जब लोग सारी रात पुकारते रहे (गिनती 13:1-14:2)। अविश्वास के उस प्रदर्शन के कारण परमेश्वर ने घोषणा कर दी कि उन्हें प्रतिज्ञा किए हुए देश में प्रवेश करने की अनुमति नहीं मिलेगी, बल्कि वे जंगल में नष्ट हो जाएंगे (गिनती 14:22, 23, 29, 30; व्यवस्थाविवरण 1:34-38; देखें भजन संहिता 95:10, 11)।

एक अर्थ में इब्रानियों के लेखक ने कहा कि यदि दाऊद अपने समय में परमेश्वर के लोगों को चेतावनी देने के लिए उन ऐतिहासिक घटनाओं का इस्तेमाल कर सकता था तो वे भी परमेश्वर के लोगों को चेतावनी देने के लिए उनका इस्तेमाल कर सकते हैं।[3] अपने पाठ में आगे चलकर हम पहले जंगल में इस्राएलियों पर ध्यान करेंगे और फिर उसे अपने लिए लागू करेंगे।

पाप

हमें आशीषित होने का अवसर मिला है

इस्राएलियों के पास उन्हें सुनाए जाने के लिए ''शुभ समाचार''[4] (इब्रानियों 4:2) अर्थात यह खुशखबरी थी कि वे अब्राहम से की गई देश देने की प्रतिज्ञा को पाने वाले हैं। जंगल में रहते हुए, परमेश्वर द्वारा उन्हें आशीष दी गई थी,[5] जिसमें उन्होंने चालीस वर्षों तक उसके

सामर्थ के कामों को देखा था (3:9ख)। वे कनान देश में ''एक विश्राम'' की राह देख रहे थे। (व्यवस्थाविवरण 12:9 में उस देश को ''विश्राम स्थान'' कहा गया है।)

इसी प्रकार आपको और मुझे शुभ समाचार (सुसमाचार) सुनाया गया है (इब्रानियों 4:2; रोमियों 10:15, 16) और हमें परमेश्वर ने बहुतायत से आशीष दी है। हमने अपने जीवनों में उसके काम को देखा है (रोमियों 8:28) और हमें स्वर्ग में विश्राम की प्रतिज्ञा दी गई है (देखें इब्रानियों 4:1, 3–5, 9–11; प्रकाशितवाक्य 14:13)।[6]

हम वही बनें, जो परमेश्वर चाहता है कि हम बनें

अफसोस की बात है कि हमारे लिए शुभसमाचार को सुनना, परमेश्वर की आशीष को ग्रहण करना और विश्राम की प्रतिज्ञा को पाना और फिर भी वह न करना सम्भव है जो परमेश्वर हमें बनाना चाहता है। परमेश्वर की आशीष पाने के बाद इस्राएलियों ने पाप किया (इब्रानियों 3:17)। उन्होंने परमेश्वर पर विश्वास या उसमें भरोसा नहीं किया (3:18, 19; 4:2)। उनके हृदय कठोर हो गए थे (3:8, 10) और वे उसके मार्ग से फिर गए थे।

इसी प्रकार से इतनी आशिषें पाने के बावजूद आप और मैं फिर भी पाप करते हैं (3:13; देखें 1 यूहन्ना 1:8, 10)। हम परमेश्वर पर विश्वास करने और उसमें भरोसा रखने में नाकाम हो सकते हैं (इब्रानियों 3:12; 4:11)। हमारे हृदय कठोर हो सकते हैं और हम जीवित परमेश्वर से दूर हो सकते हैं (3:12, 13; 4:11)।

हम परिणामों से परिचित हैं

ऐसा होने पर, परिणाम क्या हो सकते हैं? जब इस्राएलियों ने अपने मन कठोर कर लिए और परमेश्वर से अलग हो गए तो उन्होंने उसे क्रोध दिलाया (3:9, 10)। उन्होंने प्रतिज्ञा किए हुए विश्राम को ग्रहण नहीं किया (3:11, 17, 19); उन्हें प्रतिज्ञा किए हुए देश में प्रवेश की अनुमति नहीं मिली।

इसी प्रकार से जब मैं और आप अपने मनों को कठोर करके दूर चले जाते हैं तो हम भी परमेश्वर को निराश करते हैं। यदि हम अपने जीवनों में ऐसा होने देते हैं तो हमें स्वर्ग में अपने विश्राम में प्रवेश करने नहीं दिया जाएगा।

समाधान

यह सब सच है इस कारण इस त्रासदी से बचने के लिए क्या आवश्यक है? इस्राएलियों के लिए क्या आवश्यक है और हमें क्या करना आवश्यक है?[7] हमें ये बातें करनी आवश्यक है:

1. परमेश्वर के वचन को सुनें, सचमुच सुनें, ताकि हमें इसका पता चले और हम इसके न्याय में न गिरें (3:7, 10ख; 4:12)।
2. गिरने की सम्भावना से अवगत हों (3:12; 4:1, 11; देखें 1 कुरिन्थियों 10:12)।
3. अपने मनों को सीधा रखने की कोशिश करें (3:12)।
4. एक-दूसरे को प्रोत्साहित करें (3:13)।
5. समझ लें कि हमारे पास केवल आज ही है (3:7, 13, 15; 4:7)।

6. दृढ़ता से स्थिर रहने की ठान लें (3:14)।
7. समझ लें कि हम परमेश्वर को धोखा नहीं दे सकते (4:12, 13)।
8. यीशु पर निर्भर रहें (4:14-16)।

चेतावनी के चिह्नों की अनदेखी करना मूर्खता है। हमें चाहिए कि इब्रानियों के लेखक द्वारा दी गई चेतावनी पर ध्यान दें। कहते हैं कि जो लोग अतीत से सबक नहीं लेते वे बार-बार इसे दोहराते हैं। जंगल में जो कुछ इस्राएलियों के साथ हुआ हम उससे सीख लें और उनकी गलतियों को न दोहराएं।

सिखाने वाले के लिए नोट्स

इब्रानियों की पुस्तक का अधिकतर भाग पुराने नियम की कुछ जानकारी के बिना समझा या सराहा नहीं जा सकता। इस पाठ की तैयारी के लिए आपको इस्राएलियों के जंगल में घूमने और भजन संहिता 95:7ख-11 से अच्छी तरह से परिचित होना आवश्यक है।

3:1-14 पर पाठ में कुछ की जाने वाली बातों की सूची दी गई है, ऐसी सूची जो इस पाठ के वचन के पहले भाग पर आधारित है, इस कारण आप इस पाठ के अगले भाग के लिए अलग ढंग इस्तेमाल करें। आप उस त्रासदी से बचने के ढंग के सम्बन्ध में, जिसमें, इस्राएली गिरे थे, वचन पर आधारित व्यावहारिक सुझावों की सूची देने के लिए क्लास के लोगों से कह सकते हैं।

टिप्पणियां

[1]"प्रोत्साहन की एक बात" पाठ में रूपरेखा देखें। [2]इस पाठ की पृष्ठभूमि के रूप में आप जंगल में इस्राएलियों से सम्बन्धित मुख्य घटनाएं याद करा सकते हैं। [3]मसीही लोगों को चेतावनी देने के लिए जंगल में इस्राएलियों की कहानी इस्तेमाल करने का एक और उदाहरण 1 कुरिन्थियों 10:1-13 में मिल सकता है। आपको चाहिए कि आप इस पाठ के दौरान उस वचन की बात करें। [4]"शुभ समाचार" शब्द का अनुवाद "सुसमाचार" के लिए यूनानी शब्द से किया गया है। [5]उन में से कुछ आशिषों के नाम गिनाएं: स्वर्ग से मन्ना, शत्रुओं से बचाव, इत्यादि। [6]रविवार का दिन "मसीही सब्त" नहीं है। मसीही व्यक्ति का "सब्त" स्वर्ग में विश्राम होगा। [7]यह सूची "यीशु पर ध्यान करो" पाठ वाली सूची जैसी ही है। "सिखाने वाले के लिए नोट्स" भाग में अध्ययन के इस भाग के लिए इस्तेमाल किया जा सकने वाला अलग ढंग होता है।